आह्वान...

भाग 1: परिचय

दीदी की कलम से.....

डोभी के सभी दीदी-भैया के प्रणाम | हम 'आह्वान' पत्रिका के माध्यम से आप सभी को भारत सरकार के एक महत्वपूर्ण परियोजना से अपने प्रखण्ड के गाँव–गाँव में हो रहे बदलाव के बारे में बतायेंगे | आशा ही नहीं हमें पूर्ण विश्वास है कि आप लोग भी अपने आस-पड़ोस के जीवन में विभिन्न उद्यमों के माध्यम से हो रहे परिवर्तन को इस पत्रिका के माध्यम से महसूस कर पाएँगे |

'आह्वान' के प्रथम अंक में हम आपको इस महत्वपूर्ण परियोजना के बारे में परिचय कराएँगे | फिर इस परियोजना के क्रियान्वयन से डोभी प्रखंड के सभी अक्षादित गाँव में हो रहे बदलाव की कहानी, दीदियों की जुबानी सुनायेंगे | सभी पाठकगण से अनुरोध है कि अपने प्रखण्ड के गाँवों में हो रहे उत्थान से रूबरू होने के लिए पत्रिका के हर अंक को डोभी के प्रखंड संसाधन केंद्र से प्राप्त कर पढ़ें एवं अपने प्रतिक्रिया दें ताकि इस पत्रिका को और बेहतर बनाया जा सके |

परियोजना एक नज़र में

बिहार सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय के महिला सशक्तीकरण कार्यक्रम 'जीविका' के विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा गाँवों की रूपरेखा बदली जा रही है | इसी क्रम में स्व-उद्यम हेतु ग्रामीणों को उपलब्ध कराए जा रहे विकल्पों में स्टार्ट अप विलेज इंटरप्रेन्योरशिप प्रोग्राम (SVEP) एक योजना है, जो ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार का एक सराहनीय पहल है | इस योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों के सूक्ष्म उद्यमों को वित्तीय व्यवस्था के मुख्यधारा से जोड़ना है एवं इनके ऐसे व्यवसाय को जो अग्रगामी योजना रखता हो एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार मुहैया करा सके, इनके व्यवसाय-योजना को वित्तीय सहायता प्रदान करना/कराना है| इस कार्यक्रम के द्वारा ग्रामीण उद्यमिता विकास हेतु एक सुव्यवस्थित तंत्र उपलब्ध कराया जाना है |

बजट सत्र 2014-15 के दौरान यह परिकल्पना की गयी कि ग्रामीण परिवेश में लघु एवं सूक्ष्म उद्योग मंत्रालय द्वारा परिभाषित उद्यमों की श्रेणी विकसित करना एक अगली कड़ी का हिस्सा है | इस परिभाषित श्रेणी से पहले की श्रेणी का उद्यम, जो अभी भी या तो शुरू होने की प्रतीक्षा कर रहा है या सफल उद्यमी बनकर भारतीय वित्तीय व्यवस्था का अंग बनना चाह रहा है, उनके लिए एक नए संकल्पना का प्रस्ताव किया जाना चाहिए | इस श्रेणी के उद्यमियों को उद्यम शुरू करने हेतु या तो बहुत ही छोटे पूँजी की आवश्यकता होती है या उद्यम शुरू होने के पश्चात् उसे आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न स्तरों पर पेशेवर सलाह की आवश्यकता होती है | इन्हीं आवश्यकताओं के मद्देनज़र भारत सरकार ने इस योजना को देश के 24 राज्यों के 125 प्रखंडों में शुरू करने की योजना बनायी जिसके तहत अगले चार वर्षों में 182000 उद्यमियों को प्रोत्साहित किया जाना है |

स्टार्ट अप विलेज इंटरप्रेन्योरशिप प्रोग्राम के प्रथम चरण में जीविका के पहल पर बिहार के छह प्रखंडों का चयन किया गया – बोधगया एवं बाराचट्टी (गया), जन्दाहा (वैशाली), मुरौल एवं मुशहरी (मुजफ्फरपुर) एवं धनरुआ (पटना) | द्वितीय चरण में छह और प्रखंडों का चयन किया गया – खरीक (भागलपुर), राजनगर (मधुबनी), बोचहा (मुजफ्फरपुर), बिहटा (पटना), बिहारशरीफ (नालन्दा) एवं डोभी (गया) | इस कार्यक्रम को क्रियान्वित करने हेतु एक क्रियान्यवन एजेंसी- कुदुम्बश्री एन.आर.ओ. का चयन किया गया |

परियोजना को सफलता पूर्वक ब्लॉक में लागू करने हेतू ब्लॉक स्तर पर जीविका के तरफ से बी.पी.एम-एस.वी.इ.पी, तकनीकी समर्थन के लिए कुदुम्बश्री- एन.आर.ओ. से मेंटर और फील्ड-कोर्डिनेटर, परियोजना को महिलाओं तक पहुंचाने के लिए सी.आर.पी-ई.पी को रखा गया है | इसके साथ ही ब्लॉक में ब्लॉक रिसोर्स सेंटर (बी.आर.सी) का गठन किया गया है जिसके सदस्य बी.आर.सी समिति (ब्लॉक में मौजूद सी. एल.एफ. के OB मेंबर्स) हैं जिनकी मुख्य भूमिका बी. आर. सी. की सर्विसेज, उद्यम से जुड़ी तकनीकी सेवाएं सी.आर.पी-ई.पी के माध्यम से उद्यमी को उपलब्ध करवाना है |

परियोजना- डोभी के संदर्भ में

डोभी प्रखंड में कुल 13 पंचायत एवं 130 गाँव हैं एवं प्रखंड के सभी गाँवों में 1,55,413 जनसँख्या का निवास है | भारत सरकार द्वारा निर्धारित किए गए लक्ष्य के अनुरूप इस प्रखंड में 1650 लोगों को स्थापित उद्यमी के रूप में विकसित करना है | हमारे प्रखंड में यह परियोजना जुलाई 2018 को शुरू हुई और दिसंबर 2018 से इसे लागू करना शुरू किया गया | नवम्बर 2019 तक यहाँ लगभग 434 उद्यम विकसित किये जा चुके हैं |

दीदियों के नज़र से.....

जीवन में पाई नई ऊंचाई, करके अगरबत्ती की इकाई

बबीता दीदी जो कि जीविका में सी. एम के पद पर काम करती हैं, एस. वी. ई. पी. परियोजना से पिछले एक वर्ष से जुड़ी हुई हैं । दीदी ने परियोजना से 40,000 रूपए का ऋण लेकर अगरबत्ती इकाई शुरू किया है। दीदी का कहना है कि "पहले पूंजी ना होने के वजह से वह जहाँ से अगरबत्ती के लिए कच्चा माल खरीदती थी वहीं पर उनको अगरबत्ती बना कर कम दाम में बेचती थी।" लेकिन एस. वी. ई. पी. परियोजना से मदद मिलने के बाद वह अपना मशीन खरीद पाई हैं जिससे उनका अगरबत्ती उत्पादन बढ़ गया हैं । अब वह होलसेल में अगरबत्ती बेचने का काम करने लगी हैं और 10,000 के कच्चे माल से कम से कम 30,000 का माल बेच पाती हैं। परियोजना से जुड़ने के बाद उनके जीवन में आए बदलाव के बारे में बताते हुए वह कहती हैं कि उनका जीवन अब पहले से बेहतर हो गया है । अपने मुनाफ़े के बारे में बताते हुए उनका कहना है कि "पहले जितने पैसों में बोला जाता था उतने पैसे में अगरबत्ती बनाकर बेचना पड़ता था लेकिन अब मैं सशक्त हूँ । सी.आर.पी-ई.पी बबलू कुमार से मिले सपोर्ट के वजह से मैं अपना उद्यम आगे बढ़ाने का सोच रही हूँ | मैं और मशीन लेना चाहती हूँ और अगरबत्ती को सुंगंधित करके उसका अच्छा पैकेजिंग कर मार्केट में बेचना चाहती हूँ |"

गुमटी से सिलाई तक का सफ़र , व्यापार का ब्यौरा रख कर

अपनी छोटी सी गुमटी में बैठ कर ग्राहकों को सामान बेचती हुई संगीता दीदी का कहना है कि मैं अपने किराना दुकान के वजह से अपने परिवार का पालन पोषण करने में समर्थ बन गई हूँ। अपने व्यापार को आगे बढ़ाने के लिए, दुकान से कमाए हुए लाभ से दीदी ने पिको मशीन खरीदी है। उनका कहना है कि "जब मुझे दुकान में समय मिलता है तब मैं सिलाई करती हूँ जिससे कमाई बढ़ाने में मदद मिलती है ।" पूजा दीदी अपनी कमाई का पूरा ब्यौरा प्रतिदिन रखती हैं । उनका कहना है "अगर आप व्यापार चला रहे हैं तो आपको कितना मुनाफा हो रहा है यह जानना बहुत जरूरी है, इससे आपको पता चलता है कि आप अपने व्यापार को और अच्छा कैसे कर सकते हैं या आप कहाँ कटौती कर सकते हैं ।" दीदी ने यह भी बताया कि उनको अपने व्यापार का लेखा-जोखा संभालने में सी.आर.पी-ई.पी ने बहुत सहायता की है ।

घर संभालना और व्यापार दोनों है मुमकिन साथ-साथ

पूजा दीदी कहती हैं कि एस. वी. ई. पी. परियोजना के अंतर्गत उन्होंने कपड़े बनाने की ट्रेनिंग प्राप्त की । अपना अनुभव बताते हुए वह कहती हैं कि इसके पहले वह कुछ काम नहीं करती थीं , ट्रेनिंग मिलने के बाद उन्होंने कपड़े का बैग बनाना शुरू किया। उनका कहना हैं कि "छोटा बच्चा होने के वजह से उनका घर से बाहर निकल कर काम करना मुश्किल था लेकिन परियोजना से जुड़ कर उनको घर बैठे-बैठे पैसे कमाने का अवसर मिला है ।" वह बहुत खुशी से बताती हैं कि वह अपने बच्चे का ध्यान, घर का काम एवं अपना व्यापर बहुत अच्छे से संभाल पा रहीं हैं। व्यापार में विस्तार को देखते हुए दीदी ने 1,60,000 रु. निवेश करके चौप, कटिंग एवं फोल्ड मशीन लेने का फैसला किया, जिसके लिए ग्राम संगठन के द्वारा उन्हें आर्थिक मदद दी गई |

हुनर का विकास:

पर्यावरण सुरक्षा को मध्य नज़र रखते हुए बिहार सरकार के द्वारा राज्य में प्लास्टिक का प्रयोग बंद करने के बाद परियोजना के अंतर्गत महिलाओं को रोज़गार मुहैया करवाने के लिए ब्लॉक में हुनर विकास प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत महिलाओं को पेपर बैग और क्लॉथ बैग बनाने का प्रशिक्षण दिलवाया गया। क्लॉथ बैग के प्रशिक्षण में 21 और पेपर बैग के प्रशिक्षण में 23 महिलाओं ने भाग लिया | प्रशिक्षण मिलने के बाद महिलाओं ने ब्लॉक में पेपर बैग और क्लॉथ बैग का उद्यम सी.आर.पी-ई.पी की सहायता से शुरु किया।

प्रखण्ड संसाधन केंद्र टीम....

ब्लॉक रिसोर्स सेंटर एस. वी. ई. पी. के द्वारा महिला उद्यमियों को उद्यम विकास और वित्तीय मदद के साथ साथ लघु उद्योग स्थापित करने के तकनीकी सहायता प्रदान की जाती है | बी.आर.सी के द्वारा महिलाओं के उद्यम विकास के लिए सी.आर.पी-ई.पी को प्रशिक्षण दिया जाता है | डोभी ब्लॉक में समूह की महिलाओं द्वारा 400 से अधिक लघु उद्योग शुरू किया जा चुका है जिसका सालाना टर्न ओवर 1 लाख से 5 लाख के बीच है | समूह की महिलाओं को गरीबी रेखा से ऊपर उठाने एवं बिहार के ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को सुधारने में एस. वी. ई. पी. एक अहम भूमिका निभा रहा है |

श्री मुकेश ससमल (जिला परियोजना प्रभंधक, गया)

जीविका के अंतर्गत बहुत सारी परियोजना चल रही हैं लेकिन उनमे से एस.वी.इ.पी अलग हैं | एस.वी.इ.पी. परियोजना के अंतर्गत हमारी दीदियों को व्यापार शुरू करने के लिए जो ऋण मिलता है उसका प्रयोग सिर्फ व्यापार शुरू करने के लिए किया जाता हैं | परियोजना में आर्थिक मदद के साथ-साथ सी.आर.पी-ई.पी. के निरंतर साहयता के वजह से हमारी दीदियों का व्यापार अच्छा चल रहा हैं | प्रोजेक्ट में बी.आर.सी के सदस्यों की एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है, व्यापार शुरू करवाने के पहले हम सुनिश्चित करते हैं कि हमारा प्रोजेक्ट जरूरत मंद दीदी तक पहुंच रहा है,उनका व्यापार सही जगह पर शुरू हो रहा हैं तथा सी.आर.पी-ई.पी. हमारी दीदियों तक मासिक सेवा पहुंचा रहे है |

रीना देवी, (अध्यक्ष , बी.आर.सी समिति)

पहली बार केरल से बाहर दूसरे राज्य में आकर भाषा से जुड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ब्लॉक और प्रोजेक्ट में एक वर्ष बिताने के बाद भाषा से जुड़ी चुनौतियाँ अब कुछ कम हो गई है । ब्लॉक में मौजूद बी.पी.एम-एस.वी.इ.पी, दूसरे ब्लॉक के मेंटर्स एवं फील्ड-कोर्डिनेटर के सपोर्ट से मुझे प्रोजेक्ट इम्प्लीमेंट करने में बहुत सहायता मिली हैं। ब्लॉक में बीते एक साल में सी.आर.पी-ई.पी. को आगे बढ़ते देखा हैं और प्रोजेक्ट की तकनीकी को सीख कर उद्यमी को सहायता करते देखा है | कुदुम्बश्री - एन. आर. ओ. द्वारा दिए गए प्रशिक्षण, केरल के अपने कम्युनिटी लीडर के अनुभव का प्रयोग करके डोभी ब्लॉक की महिलाओं को आगे बढ़ाना और उनको आर्थिक तरीके से स्वशक्त बनाना मेरा सपना है।

लता के. एन (मेंटर, कुदुम्बश्री - एन.आर.ओ.)

व्यापार का बिज़नेस प्लान बनाना, उसकी विएबिलिटी जाँच, बिज़नेस मैनेजमेंट, कस्टमर रिलेशन्स, आय, लागत तथा रिस्क मैनेजमेंट अब अच्छे तरह से समझ पाते हैं | हमारा उद्देश्य दीदियों की सिर्फ दुकान खुलवाना नहीं बल्कि व्यापार को आगे बढ़ाने में सहायता जैसे - कच्चा माल कहाँ से लाना चाहिए , हर महीने कितनी नकद और कितना क्रेडिट बिक्री करना चाहिए , व्यापार में मुनाफे के लिए क्या बदलाव लाना चाहिए आदि भी हैं | परियोजना से मिली यह सारी सुविधाओं के वजह से दीदियों के अंदर से व्यापार करने का डर कम हो गया हैं |

अमित कुमार गौतम (अध्यक्ष, सी.आर.पी-ई.पी डोभी)

ब्लॉक में बी. पी. एम. - एस.वी.इ.पी के पद पर काम करने का अनुभव अलग रहा है | प्रोजेक्ट को अच्छी तरह ब्लॉक में लागू करने के लिए मुझे जीविका तथा कुदुम्बश्री- एन. आर. ओ. दोनों के साथ साझेदारी करनी पड़ती हैं | प्रोजेक्ट के चार वर्ष के दौरान बी.आर.सी समिति को स्वशक्त बनाना, सी.आर.पी-ई.पी. को गाइडलाइन्स के अनुसार अच्छे से काम सिखाना मेरा फोकस है | जीविका के अंतर्गत बहुत सारी परियोजना को लागू करने के लिए मैंने काम किया हैं लेकिन एस.वी.इ.पी. के अंतर्गत ग्रामीण महिलाओं को स्वशक्त बनाने के लिए उनका व्यापार खुलवाना और एक वर्ष तक उन्हें व्यापार में तकनीकी सपोर्ट दिलवाकर यह सुनिश्चित करना कि उनके स्वरोजगार में कोई दिक्कत ना आये एक नया अनुभव रहा है | मुझे जरूरतमंद तक परियोजना पहुंचाने तथा साथ ही साथ उस परियोजना से जुड़े सारे लाभ वह लम्बे समय तक प्राप्त कर पा रहे हैं यह सुनिश्चित करने का अवसर मिला है |

कुमार अभिजीत (BPM-SVEP**)**

S.V.E.P. Team, Dobhi

Block Resource Center- Jeevika, Old Block Road, Gaya Mor, Dobhi , Gaya, Bihar -824220
Email: brcdobhijeevika@gmail.com